International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 311-312

प्राचीन भारतीय–भू–भाग का मानक विभाजन

चन्द्रोदय सिंह
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डॉ0 रा0 मो0 लो0 अ0 वि0, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश भारत।

प्रस्तावना

जैन ग्रन्थ जंबुद्दीवपण्णत्ति में भारतवर्ष के अंगों के रूप में सात वर्षों का वर्णन प्राप्त होता है, इन्हीं सात वर्षों में बाद में 2 वर्ष जोड़ देने पर इसकी संख्या बढ़कर नौ हो गयी[1]। पौराणिक संसृति–विज्ञान में भी भारत को नौ खण्डों में विभाजित किया गया है, जो समुद्रों के द्वारा एक दूसरे से अलग–अलग थे[2], परन्तु वर्तमान भारत में यदि हम दृष्टिपात करते है, तो इसके आठ खण्ड भारत के भाग के रूप में परिलिक्षित नहीं होते है; अपितु ये आठ खण्ड बृहत्तर भारत के प्रान्त, द्वीप और देश है, जो कि भारतीय प्रायद्वीप को परिवेष्टित किये हुए हैं।

बौद्ध ग्रन्थों में भी प्राचीन भारतवर्ष के भू–भाग का वर्णन प्राप्त होता है। महावग्ग में बौद्ध मज्झिमदेश की सीमा को पूर्व में कजंगल नगर तक दक्षिणपूर्व में सललवती नदी (शरावती) तक, दक्षिण में शतकर्णित नगर तक, पश्चिम में थून (स्थानेश्वर) के ब्राह्मण जिले तक और उत्तर में उसीर ध्वज पर्वत (हरिद्वार, उसीरगिरि पर्वत) तक फैला हुआ बताया गया है[3], जबकि दिव्यावदान में मज्झिमदेश की पूर्वी सीमा को आगे तक बढाकर पुण्ड्रवर्द्धन तक बताया गया है। शेष सभी दिशाओं की सीमाऐं महावग्ग में वर्णित सीमाओं के सामान ही हैं[4]। पूर्वकालीन बौद्धग्रन्थ दीर्घनिकाय में भारत को सात बराबर भागों में बाँटा गया है, जो कि उत्तर में चौड़ा और दक्षिण में यह बैलगाड़ी के अगले भाग के आकार के समान है[5]। इस उल्लेख से इतना जो जरूर आभास होता है कि भारतवर्ष का आकार लगभग इससे मिलता–जुलता हुआ ही है, क्योंकि पूर्व से पश्चिम तक इसका आकार फैला हुआ है, जबकि दक्षिण पर दृष्टि डालने से यह त्रिभुजाकार नजर आता हैं।

पाणिनि के ग्रन्थ अष्टाध्यायी के सूत्रों में उल्लिखित निश्चित स्थान नामों की सहायता से पाणिनि–कालीन भारतीय भू–भाग का ज्ञान प्राप्त होता है। उत्तर–पश्चिम में कापिशी का उल्लेख मिलता है।[6] यहाँ से प्राप्त एक शिलालेख में भी इसे कपिशा कहा गया है। इसके अवशेष काबुल से लगभग 40 मील उत्तर में मिले हैं। कापिशी से भी और उत्तर में कम्बोज जनपद था तथा उत्तर के पहाड़ों में हिमालय की जगह पाणिनी ने हिमवत नाम का प्रयोग किया है। पूर्वी समुद्रतट पर कलिंग देश था, जहाँ इस समय महानदी बहती है। सबसे पूर्वी जनपद का नाम पाणिनि ने सूरमय दिया है। इसकी पहचान असम प्रान्त की सूरमा नदी की घाटी और गिरि प्रदेश से की जा सकती है। दक्षिण में गोदावरी–तटवर्ती अश्मक जनपद का नामोल्लेख भी प्राप्त होता है। अश्मक की राजधानी प्रतिष्ठान थी जो गोदावरी के बाँए किनारे बम्बई और हैदराबाद की सीमा पर स्थित वर्तमान समय में पैठण है। पाणिनि द्वारा सबसे पश्चिमी जनपद के रूप में सौवीर का उल्लेख किया गया है, जो कि वर्तमान काल में सिन्धु प्रान्त था सिन्ध नदी के निचले काठे का पुराना नाम था इस प्रकार हम देखते है कि पाणिनि द्वारा उल्लिखित जनपदों के आधार पर भारतीय भू–भाग के रूप में उत्तर में कम्बोज, दक्षिण में अश्मक, पश्चिम में सौवीर और पूर्व में सुरमय इन चारों के बीच का भू–प्रदेश पाणिनी की भारतीय भौगोलिक परिधि के अन्तर्गत था।

यूनानी लेखकों के ग्रन्थों के माध्यम से भी प्राचीन भारत के आकार एवं भू–भाग के विषय में प्रर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। सिकन्दर के भारतीय अभियान में उसके साथ आये लेखकों ने बड़ी संख्या में भारत से सम्बन्धित वृतान्त एवं संस्करण लिखे, परन्तु ये सभी ग्रन्थ अब लुप्तप्राय हो चुके हैं, लेकिन इन्हीं ग्रन्थों के सारांश को स्ट्रैबो, प्लिनी एवं एरियन ने अपनी कृतियों के उर्द्धत किया है, जिससे हमें भारत–विषयक सूचना पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है। सिकन्दर ने भारत को एक समप्रतिभुज अथवा विषम चतुर्भुज के आकार का बतलाया है, जिसके पश्चिम में सिन्धु नदी, उत्तर में पहाड़ और दक्षिण तथा पूर्व में समुद्र स्थित थे।[7] ऐसा ही उल्लेख महाभारत में भी प्राप्त होता है।

कालिदास ने रघुवंश में उल्लेख किया है कि अपने दिग्विजय अभियान में रघु सर्वशक्तिशाली मध्यवर्ती अयोध्या राज्य से सुदूर पूर्व का मार्ग पकड़ते हुए भारत की पूर्वी सीमा बंगोपसागर[8] के तट पहुँचते हुए, पूर्वी जनपद के निवासियों सुध्य बंग और उत्कलवासियों से आधिपत्य स्वीकार कराते हुए, गज सैन्य के लिए विख्यात कलिंग मार्ग से आगे बढ़ते हुए, पूग वृक्षों से भरे सागर तट के साथ–साथ दक्षिण की ओर अग्रसर होते हुए, कावेरी[9] को पार करके मामलों की भूमि मलाया होते हुए, सुदूर दक्षिण में पांड्यों[10] को असफल करते हुए, पर्वतों की बीच पालघाट दर्रे से पश्चिमी घाट पहुँचकर पश्चिमी समुद्री किनारे (अपरान्त) पर विजय प्राप्त करके आगे बढ़ते हुए उत्तर दिशा में प्रमाण करते हुए पारस से हिन्दुकुश के किनारे–किनारे बढ़कर हूणों को मारते–गिराते हुए, पूर्व की ओर अग्रसर हो हिमवान को पार करके ब्रह्मपुत्र की तराई में पहुँचकर किरात उत्सव संकेतो और कन्नरों पर विजय प्राप्त कर ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके कामरूप–देश प्राग्ज्योतिषपुर[11] पर विजय प्राप्त कर अपने अभियान को सफल बनाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास कालीन पूर्वी सीमा बंगोपसागर तथा पश्चिमी सीमा अपरान्त और दक्षिणी सीमा पांड्य तथा उत्तरी सीमा हिमालय तक थी।

सातवीं शती में आये चीनी यात्री युवान–च्याँग ने भारत को अर्धचन्द्राकार बताया है, जिसका चौड़ा भाग उत्तर में और दूसरा छोर दक्षिण में है। युवान–च्याँग ने भारत को अर्धचन्द्राकार इसलिए बताया है, क्योंकि उसके द्वारा की गयी भारत यात्रा लगभग उत्तरी भागों तक ही सीमित थी। यही कारण है कि विन्ध्य क्षेत्र को आधार तथा पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए हिमालय को व्यास मानकर ही उसने भारत को अर्धचन्द्राकार बताया है, जबकि चीनी लेखक फाह–किया–लिह–तो का वर्णन बौद्ध ग्रन्था दीर्घनिकाय से पूरी तरह मिलता–जुलता है। उसके अनुसार यह देश उत्तर की ओर चौड़ा और दक्षिण की ओर संकीर्ण है। सातवीं शती ई0 के चीनी

थंग वंश के शासकीय प्रलेखों में भारत के पाँच भाग बताये गये हैं, जिनके नाम प्राच्य, प्रतीच्य, दक्षिण और मध्य हैं। ये सभी भाग पंचभारत के नाम से विख्यात थे।[12]

पूर्वकालीन भारतीय ग्रन्थ काव्यमीमांसा में यह उल्लेख प्राप्त होता है कि प्राच्य देश वाराणसी के पूर्व में, पश्चिम देश देवसभा के पश्चिम में, उत्तरापथ पृथुंदक के पश्चिम (पृथूद्रकातपरतः उत्तरापथः) में तथा दक्षिणापथ–माहिष्मती के (मान्धाता से समीकृत) दक्षिण में स्थित था।[13]

महाभारत के भीष्मपर्व और अन्य पर्वों में उल्लिखित भिन्न–भिन्न तीर्थ यात्राओं के और दिग्विजयों के वर्णन से हमें प्राचीन भारतीय भू–भाग के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है। महाप्रस्थानिक पर्व में जम्बूद्वीप का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि पाण्डव पूर्व की ओर जाते–जाते उद्यांचल के पास लौहित्य सागर के निकट जा पहुँचे।[14] वहाँ अग्नि ने उनका रास्ता रोका, उनके कहने से अर्जुन ने गांडीव धनुष समुद्र में डाल दिया। इसके बाद वे दक्षिण की ओर घूम पड़े और लवण समुद्र के उत्तरी तट से दक्षिण–पश्चिम दिशा की ओर गये। इसके बाद फिर पश्चिम की ओर घूमकर पृथ्वी प्रदक्षिणा करते हुए उत्तर की ओर गये तब उन्हें हिमालय नामक महागिरि मिला।[15] इस वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि लौहित्य सागर अर्थात रक्त का समुद्र और उदयगिरि पर्वत पूर्व की ओर थे तथा यह निश्चित रूप से स्पष्ट होता है कि लवण समुद्र नैऋत्य और पश्चिम से मिला हुआ दक्षिण की ओर था।

महाभारत के भीष्मपर्व में महाभारत कालीन भारतवर्ष का लगभग सम्पूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। यह भाग भूगोल वर्णन का ही है, क्योंकि इस पर्व में धृतराष्ट्र संजय से भूतल पर आश्रित नदियों, पर्वतों तथा जनपदों के और दूसरे भी पदार्थों का मान बताने को कहते हैं। संजय बताते हैं कि नीलगिरि के दक्षिण और निषध के उत्तर सुदर्शन नामक एक विशात जामुन का वृक्ष है, जो सदा स्थिर रहने वाला है। वह समस्त मनोवांछित फलों को देने वाला, पवित्र तथा सिद्धों और चारणों का आश्रय है। उसी के नाम पर यह सनातन प्रदेश जम्बूद्वीप के नाम से विख्यात है। राजन अब मैं आपसे उस भारतवर्ष का वर्णन करूँगा, जो इन्द्रदेव और वैवस्वत मनु का प्रिय देश है।[16] इस भारतवर्ष में मलय,, महेन्द्र, सहय, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विन्ध्य और पारियात्र ये सात पर्वत हैं तथा इनके आसपास और भी हजारों अविज्ञात पर्वत हैं। कृष्णा, मन्दाकिनी, वैतरणी, महानदी, सरस्वती, गंगा आदि नदियों के जल भारतवासी पीते हैं। इसक शिवा सैकड़ों और हजारों ऐसी नदियाँ हैं, जो लोगों के परिचय में नहीं आती हैं।[17] इसके बाद अब मैं भारतवर्ष के जनपदों का वर्णन करता हूँ। आगे संजय धृतराष्ट्र को उस समय के सभी जनपदों का नाम बताते हैं, जो कि उस समय मौजूद थें इन जनपदों का उल्लेख भीष्मपर्व में विस्तारपूर्वक 9वें अध्याय के 39–70 तक के श्लोकों में किया गया है। इसमें यदि किसी देश का नाम नहीं आया हो, तो इतना तो अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि वह देश महाभारतकाल में ईसवी सन् के 250 वर्ष पहले के लगभग अस्तित्व में नहीं था, लेकिन इस खण्ड में सम्पूर्ण देश की नदियों, पर्वतों और देशों की जो सूची दी गयी है, वह दुर्भाग्य से सिलसिलेवार दिशाओं के क्रम में नहीं दी गयी है। अतः महाभारत में अन्य सैकड़ों जगह दिये गये भौगोलिक उल्लेखों का उपयोग करके महाभारतकालीन भू–भाग का विभाजन वर्तमान मानचित्र के आधार पर करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है।

उपसंहार

उत्तरी भारत–25^0 अक्षांश से 36^0 उत्तरी अक्षांश व 72^0 पूर्वी देशान्तर से 85^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके अन्तर्गत सिंधु और झेलम नदी के दोआब का क्षेत्र (वर्तमान पाकिस्तान व पश्चिमी जम्मू–कश्मीर राज्य) वर्तमान भारत का यमुना नदी का पूर्वी और पश्चिमी भाग (दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र) से गंगा–यमुना दोआब का सम्पूर्ण प्रदेश (पूर्वी उत्तर प्रदेश का वाराणसी तक का प्रदेश) तथा अरावली पर्वतमाला के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित राजपूताना क्षेत्र उत्तरी भारत में सम्मिलित है। उत्तरी भारत के नगरों में पुष्कलावती, तक्षशिला, इन्द्रप्रस्थ, विराटनगर, हस्तिनापुर, हरिद्वार, मथुरा, अहिच्छत्र, काम्पिल्य, कौशाम्बी, प्रयाग, अयोध्या, श्रावस्ती और काशी सम्मिलित थे।

दक्षिण भारत–8^0 उत्तरी अक्षांश से 23^0 उत्तरी अक्षांश व 74^0 पूर्वी देशान्तर से 88^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके अन्तर्गत बरार, तेलंगाना, महाराष्ट्र, कोंकण के आधुनिक क्षेत्र तथा हैदराबाद के क्षेत्र सहित मैसूर, त्रावनकोर, कोचीन, कन्याकुमारी का सम्पूर्ण प्रायद्वीप, नर्मदा और महानदी नदियों के दक्षिण क्षेत्र में स्थित सम्पूर्ण प्रायद्वीप के क्षेत्र सम्मिलित हैं। दक्षिणी भारत के नगरों में केरलपुत्र, काच्ची, आन्ध्रविषय और कलिंग नगर सम्मिलित थे।

पूर्वी भारत–23^0 उत्तरी अक्षांश से 29^0 उत्तरी अक्षांश व 85^0 पूर्वी देशान्तर से 97^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य, स्थित है। इसके अन्तर्गत मध्यगंगा व ब्रह्मपुत्र का दोआब तथा डेल्टा क्षेत्र एवं गंगा ब्रह्मपुत्र का पूर्वी मैदान व हिमालय का पूर्वी भाग बंगाल, बिहार, असम और अरूणाचल प्रदेश तक का क्षेत्र सम्मिलित है। पूर्वी भारत के नगरों में मिथिला, राजगृह, चम्पा और प्राग्ज्योतिषपुर नगर सम्मिलित थे।

पश्चिमी भारत–20^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश व 66^0 पूर्वी देशान्तर से 73^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके अन्तर्गत नर्मदा व सिंधु नदी का दोआब क्षेत्र व राजस्थान का दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र, गुजरात के कच्छ का रन, काठियावाड़ प्रायद्वीप व खंभात की खाड़ी तथा अरावली का पश्चिमी क्षेत्र सम्मिलित है। पश्चिमी भारत के नगरों में द्वारका, प्रभास, गिरिनगर एवं शूद्रदेश नगर सम्मिलित थे।

संदर्भ– सूची

1. वी0सी0 लाहा, इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्टान ऑफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म, पृ0 1
2. वी0सी0 लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ0 121
3. महावग्ग, 5, 12, 13
4. दिव्यावदान, पृ0 21–22
5. दीर्घनिकाय, पृ0 2–235
6. अष्टाध्यायी, 4/2/99
7. कनिंघम, ऐंशिएण्ट ज्यॉग्रफी आफ इंडिया, पृ0 4
8. रघुवंश, 4/32 ''पूर्वसागरगामिनी''
9. वही, 4/45
10. वही, 4/49
11. वही, 4/81 ''प्राग्ज्योतिषेश्वरः.....तमीशः कामरूपाणा''
12. कनिंघम् पूर्वोक्त, पृ0 2
13. काव्यमीमांसा, 93
14. महाभारत, 17/1/33
15. वही, 17/2/1
16. वही, 6/9/5
17. वही, 6/9/33–37